Shri Pitambara Dashashloki

श्रीपीताम्बरदशश्लोकी

Document Information

Text title : Shri Pitambara Dashashloki

File name : pItAmbaradashashlokI.itx

Category : deities_misc, gurudev, nimbArkAchArya, dashaka

Location : doc_deities_misc

Author : shrIjI

Proofread by : Mohan Chettoor

Latest update : January 28, 2023

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

January 28, 2023

sanskritdocuments.org

श्रीपीताम्बरदशश्लोकी

॥ श्रीसर्वेश्वरो जयति ॥

॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

निम्बार्काचार्यपादाब्ज-परम्पराऽऽगतं भुवि ।
परशुरामदेवञ्चाऽऽचार्यं जगद्गुरुं भजे ॥ १॥

परशुरामदेवस्य पट्टशिष्यमतिप्रियम् ।
श्रीहरिवंशमाचार्यं ततः पीताम्बरं भजे ॥ २॥

इत्थञ्च तत्त्ववेत्तारं दाधीच-विप्रसत्तमम् ।
परशुरामदेवस्य शिष्यं नमामि सादरम् ॥ ३॥

इमे त्रयश्च शिष्या हि विरक्ताः सिद्धिसागराः ।
गुरोराज्ञां समादाय विचरन्तिस्म भूतले ॥ ४॥

एषु पीताम्बरोदेवः कृष्णदुर्गाऽन्तिके शुभे ।
दु-निर्झरयुतेऽद्रौतत्कन्दरे न्यवसत्पुरा ॥ ५॥

तन्नाम कन्दरा जाता श्रीपीताम्बरकन्दरा ।
कालान्तरे चला-ग्रामेऽवसत्सीकरमण्डले ॥ ६॥

तत्प्रभावं चलाक्षेत्रेऽवगच्छन्ति जनाः समे ।
इत्थं पीताम्बरं देवं वन्दे निम्बार्कभावनम् ॥ ७॥

राधाकृष्णपदाम्भोजे ध्यानलीनञ्च नित्यशः ।
एवं पीताम्बरं देवं नौमि गोपालसेवकम् ॥ ८॥

गोविप्रसाधुसेवायां तत्परं पूर्णनिष्ठया ।
श्रीमत्पीताम्बरं वन्दे गोपालमन्दिरे स्थितम् ॥ ९॥

निम्बार्कशास्त्रसिद्धान्त-द्वैताद्वैतप्रचारकम् ।
श्रीमत्पीताम्बरं देवं गौडविप्रं भजे हृदा ॥ १०॥

पीताम्बरसुदेवस्य दशश्लोकी सुखप्रदा ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मिता ॥ ११॥

इति श्रीपीताम्बरदशश्लोकी समाप्ता ।

Proofread by Mohan Chettoor

Shri Pitambara Dashashloki

pdf was typeset on January 28, 2023

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*